गुणट्ठाणाणं सत्थाणादिखेत्ताणि होंति। णवरि वेदण-कसायखेत्ताणि णवहि गुणेयव्वाणि, सरीरतिगुणविक्खंभादो। विहारवेउव्वियपदाणं संखेज्जाणि घणंगुलाणि। अथवा वेदणादिणा सरीरतिगुणसमुग्घादं करेंता सुट्ठु थोवा त्ति मज्झिमगुणगारो णवद्धरूव-पमाणो होदि। एदेहि लोगे भागे हिदे लद्धं विरलेदूण एक्केक्कस्स रूवस्स लोगं समखंडं कादूण दिण्णे एगभागो एदेहि रुद्धखेत्तं होदि। उड्ढलोगपमाणं तिण्णि रज्जुबाहल्लं जगपदरं। एत्थ वि ओवट्टणा पुव्वं व कादव्वा। अधोलोगपमाणं चत्तारि रज्जुबाहल्लं जगपदरं। तधा चेव ओवट्टणा। तिरियलोगपमाणं जोयणलक्ख-सत्तभागबाहल्लं जगपदरं। एत्थ वि ओवट्टणा पुव्वं व कायव्वा। एत्थ तिरियलोगपमाणे आणिज्जमाणे विक्खंभायामेहि एगरज्जुपमाणमेव तिण्हं

इसके प्रमाणांगुल हुए $\frac{\frac{१६८^२}{२०} \times २ \times १६८}{५००^३} = \frac{९४८३२६४}{५०००,०००,००००} = \frac{९२६१}{१९५३१२५}$

यह राशि प्रमाणघनांगुलके संख्यातवें भाग हुई। इसे सौधर्म ईशान स्वर्गोंकी सासादनादि तीन गुणस्थानवर्ती राशियोंसे गुणा करनेपर तीनों गुणस्थानोंके स्वस्थानादि पदोंके क्षेत्रोंका प्रमाण आता है, जो तीनों लोकोंके असंख्यातवें भाग तथा अढ़ाई द्वीपसे असंख्यातगुणा होता है।

इतनी विशेषता है कि वेदनासमुद्घात और कषायसमुद्घातका क्षेत्र लानेके लिये मूल अवगाहनाको नौ से गुणित करना चाहिये, क्योंकि, वेदना और कषाय समुद्घातमें उत्कृष्टरूपसे शरीरसे तिगुना विस्तार पाया जाता है। विहारवत्स्वस्थान और वैक्रियिकसमुद्घातका क्षेत्र लानेके लिये संख्यात घनांगुल गुणकार होते हैं। अथवा, वेदनासमुद्घात आदिके द्वारा शरीरसे तिगुने समुद्घातको करनेवाले जीव स्वल्प हैं, इसलिये मध्यम गुणकार नौ के आधेरूप अर्थात् साढ़े चार होता है। इन पूर्वोक्त गुणकारोंसे लोकके भाजित करनेपर जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति लोकको समान खंड करके देयरूपसे दे देनेपर प्रत्येक विरलनके प्रति जो एक भाग प्राप्त होता है उतना इन गुणकारोंसे रुद्ध क्षेत्र होता है। तीन राजुबाहल्यसे युक्त जगत्प्रतरप्रमाण ऊर्ध्वलोक है। यहांपर भी अपवर्तना पहलेके समान करनी चाहिये। चार राजु मोटा और जगत्प्रतरप्रमाण लंबा चौड़ा अधोलोक है। यहांपर भी पूर्वके समान अपवर्तना करनी चाहिये। एक लाख योजनमें सातका भाग देनेसे जितना लब्ध आवे उतना मोटा और जगत्प्रतरप्रमाण लंबा चौड़ा तिर्यग्लोक है। यहांपर भी अपवर्तना पहलेके समान करनी चाहिये। यहां तिर्यग्लोकका प्रमाण लानेपर विष्कंभ और आयामसे एक राजुप्रमाण ही है, अतः घनलोक, ऊर्ध्वलोक और अधोलोक इन तीन लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें तिर्यग्लोक है, ऐसा कितने ही आचार्य

लोगाणमसंखेज्जदिभागे तिरियलोगो होदि त्ति के वि आइरिया भणंति, तं ण घडदे, पुव्वब्भुवगमेण सह विरोधा । को सो पुव्वब्भुवगमो ? चत्तारि तिण्णि-रज्जुबाहल्ल-जगपदरपमाणा अध-उड्ढलोगा, सत्तरज्जुबाहल्लजगपदरपमाणो सव्वलोगो त्ति । माणुसलोगपमाणं पणदालीसजोयणसदसहस्सविक्खंभं जोयणसदसहस्सुस्सेधं[1] । पुणो विक्खंभुस्सेधे अंगुलाणि करिय—

> व्यासं षोडशगुणितं षोडशसहितं त्रिरूपरूपैर्भक्तम् ।
> व्यास-त्रिगुणितसहितं सूक्ष्मादपि तद्भवेत्सूक्ष्मम् ॥ १४ ॥

कहते हैं, परन्तु उनका इस प्रकारका कथन घटित नहीं होता है, क्योंकि, इस कथनका पूर्वमें स्वीकार किये गये कथनके साथ विरोध आता है ।

शंका— वह पहले स्वीकार किया गया कथन कौनसा है ?

समाधान— चार राजु मोटा और जगत्प्रतरप्रमाण लंबा चौड़ा अधोलोक है । तीन राजु मोटा और जगत्प्रतरप्रमाण लंबा चौड़ा ऊर्ध्वलोक है । सात राजु मोटा और जगत्प्रतरप्रमाण लंबा चौड़ा सर्वलोक है, यही वह पूर्व स्वीकार किया गया कथन है ।

पेंतालीस लाख योजन विष्कंभरूप और एक लाख योजन ऊंचा मानुषलोक है । पुनः पूर्वोक्त गुणकाररूप क्षेत्रसंबन्धी विष्कम्भ और उत्सेधके अंगुल करके—

व्यासको सोलहसे गुणा करे, पुनः सोलह जोड़े, पुनः तीन एक और एक अर्थात् एकसौ तेरहका भाग देवे और व्यासका तिगुना जोड़ देवे, तो सूक्ष्मसे भी सूक्ष्म परिधिका प्रमाण होता है ॥ १४ ॥

विशेषार्थ— यहांपर मंडलाकार क्षेत्रकी परिधिका प्रमाण लानेकी प्रक्रिया बतलाई गई है । स्थूल मानसे तो परिधिका विस्तार व्याससे तिगुणा ले लिया जाता है, यथा-वासो तिगुणो परिही (त्रि. सा. १७) इससे भी सूक्ष्मप्रमाण दशका वर्गमूल बतलाया गया है । यथा-विक्खंभवग्गदहगुणकरणी वट्टस्स परिरओ होदि (त्रि. सा. ९६) । किन्तु प्रस्तुत गाथामें इस सूक्ष्मप्रमाणसे भी सूक्ष्मतर प्रमाण निकालनेकी प्रक्रिया बतलाई गई है, जो इस प्रकार है—

उदाहरण— १ राजु व्यासके वृत्तक्षेत्रकी परिधिका प्रमाण इस प्रकारसे होगा—

$$\frac{\text{१} \times \text{१६} + \text{१६}}{\text{११३}} + \frac{\text{१} \times \text{३}}{\text{१}} = \frac{\text{३७१}}{\text{११३}} = \text{३}\frac{\text{३२}}{\text{११३}} \text{ राजु ।}$$

उसी प्रकार ७ राजु वृत्तक्षेत्रकी परिधिका प्रमाण इस प्रकार होगा—

$$\frac{\text{७} \times \text{१६} + \text{१६}}{\text{११३}} + \frac{\text{७} \times \text{३}}{\text{१}} = \frac{\text{२५०१}}{\text{११३}} = \text{२२}\frac{\text{१५}}{\text{११३}} \text{ राजु ।}$$

---

१ तसणालीबहुमज्झे चित्ताय खिदीय उवरिमे भागे । अइवट्टो मणुवजगो जोयणपणदाललक्खविक्खंभो । ति. प. ४, ६.

एदेण सुत्तेण परिट्ठियं कादूण विक्खंभचउब्भागेण गुणिदे जादाणि पदरंगुलाणि। पुणरवि उस्सेधेण गुणिदे संखेज्जाणि घणंगुलाणि जादाणि। पुव्वं व ओवट्टणा एत्थ कायव्वा। मारणंतिय-उववादगद-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणमेवं चेव वत्तव्वं। णवरि ओघरासिमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडेदूणेगभागो उववादं करेदि। तस्स वि असंखेज्जा भागा विग्गहगदीए उववादं करेंति त्ति ओघरासिस्स दो आवलियाए असंखेज्जदिभागा भागहारा ठवेदव्वा। पुणो रूवूणावलियाए असंखेज्जदिभागो उवरि गुणगारो ठवेदव्वो। सेढीए संखेज्जदिभागायामविदियदंडट्ठियजीवे इच्छिय अवरो आवलियाए असंखेज्जदिभागो भागहारो ठवेयव्वो। उवरि घणंगुलस्स संखेज्जदिभागमवणिय पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागं संखेज्जपदरंगुलाणि च गुणगारं ठविय किंचूणदिवड्डरज्जूहि गुणिय ओवट्टेयव्वं। मारणंतियस्स एवं चेव वत्तव्वं। णवरि अप्पणो रासिस्स असंखेज्जदिभागो मारणंतियं करेदि। मारणंतियकालादो गुणकालस्स संखेज्जगुणत्तादो मारणंतियजीवा सग-सगसव्वजीवेहिंतो संखेज्जगुणहीणा किण्ण होंति? ण, मरंतजीवेहिंतो तम्हि चेव भवे मिच्छत्तं पडिवज्जमाणजीवाणम-

---

इस सूत्रके नियमानुसार परिधि करके व्यासके चौथे भागसे गुणित करनेपर प्रतरांगुल हो जाते हैं। पुनः इन प्रतरांगुलोंको उत्सेधसे गुणित करनेपर संख्यात घनांगुल हो जाते हैं। यहांपर भी पहलेके समान अपवर्तना करनी चाहिये। अर्थात् इन घनांगुलोंके प्रमाणघनांगुल करनेके लिये पांचसौके घनका भाग देना चाहिये।

मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादगत सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टियोंका इसी प्रकार कथन करना चाहिये। इतनी विशेषता है कि ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि राशिको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे उतनी राशि उपपाद करती है। तथा इस उपपादराशिके असंख्यात बहुभागप्रमाण जीव विग्रहगतिसे उपपाद करते हैं। इसलिये दो वार आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण ओघराशिके भागहार स्थापित करने चाहिये। तथा एक कम आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण ऊपर गुणकार स्थापित करना चाहिये। जगत्श्रेणीके संख्यातवें भाग लंबे दूसरे दंडमें स्थित जीवोंकी अपेक्षा फिर भी आवलीका असंख्यातवां भाग भागहार स्थापित करें और ऊपर घनांगुलके संख्यातवें भागको निकालकर उसके स्थानमें प्रतरांगुलके संख्यातवें भागप्रमाण और संख्यात प्रतरांगुलप्रमाण गुणकारको स्थापित करके, कुछ कम डेढ़ राजुसे गुणित करके अपवर्तित करना चाहिये, क्योंकि, मध्यलोकसे सौधर्मकल्प डेढ़ राजु ऊंचा है। मारणान्तिकसमुद्घातका भी इसी प्रकार कथन करना चाहिये। इतनी विशेषता है कि अपने अपने गुणस्थानसंबन्धी राशिके असंख्यातवें भागप्रमाण राशि मारणान्तिकसमुद्घात करती है।

शंका— मारणान्तिकसमुद्घातके कालसे गुणस्थानका काल संख्यातगुणा है, इसलिए मारणान्तिकजीव अपने अपने गुणस्थानके सर्व जीवोंसे संख्यातगुणे हीन क्यों नहीं होते हैं?

संखेज्जगुणत्तादो, उवसमसम्मत्तद्धावसेसे आउए उवसमसम्मत्तगुणं पडिवज्जंताण बहुवाणमभावादो, तत्तो तस्स संखेज्जगुणणियमाभावादो च । एत्थ उवरिमरासिस्स गुणगारो पुव्वुत्तो चेव होदि, देवरासिस्स पहाणत्तादो । उववादे पुण तिरिक्खरासी पहाणो। णवरि असंजदसम्माइट्ठि-उववादे देवा पहाणा, मारणंतिए तिरिक्खा पहाणा। सम्मामिच्छाइट्ठिस्स मारणंतिय-उववादा णत्थि, तग्गुणस्स तदुहयविरोहित्तादो ।

एवं संजदासंजदाणं। णवरि उववादो णत्थि, अपज्जत्तकाले संजमासंजमगुणस्स अभावादो । संजदासंजदाणमोगाहणगुणगारो घणंगुलं। मारणंतिए पदरंगुलं दादव्वं। वेगुव्वियपदेण सगरासिस्स असंखेज्जदिभागो आवलियाए असंखेज्जदिभागपडिभागेण । संजदासंजदाणं कधं वेउव्वियसमुग्घादस्स संभवो ? ण, ओरालियसरीरस्स विउव्वणप्पयस्स विण्हुकुमारादिसु दंसणादो[1] । संजदासंजदेसु वि मारणंतियरासी ओघरासिस्स असंखेज्जदिभागो । कारणं पुव्वं परूविदं ।

समाधान— नहीं, क्योंकि, मरण करनेवाले जीवोंसे उसी भवमें मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाले जीव असंख्यातगुणे होते हैं। अथवा, उपशमसम्यक्त्वके कालप्रमाण आयुके अवशिष्ट रहनेपर उपशमसम्यक्त्व गुणको प्राप्त होनेवाले बहुत जीव नहीं पाये जाते हैं और मारणान्तिकसमुद्घातके कालसे गुणस्थानका काल संख्यातगुणा होता है, ऐसा कोई नियम नहीं है।

यहांपर उपरिम राशिका गुणकार पूर्वोक्त ही है, क्योंकि, यहां देवराशिकी प्रधानता है। उपपादमें तो तिर्यंचराशि प्रधान है । इतनी विशेषता है कि असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसंबन्धी उपपादमें देव प्रधान हैं। तथा असंयतगुणस्थानसंबन्धी मारणान्तिकसमुद्घातमें तिर्यंच प्रधान हैं। सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद नहीं होते हैं, क्योंकि, इस गुणस्थानका इन दोनों प्रकारकी अवस्थाओंके साथ विरोध है ।

इसी प्रकार संयतासंयतोंका क्षेत्र जानना चाहिये । इतना विशेष है कि संयतासंयतोंके उपपाद नहीं होता है, क्योंकि, अपर्याप्त कालमें संयमासंयम गुणस्थान नहीं पाया जाता है। संयतासंयतोंकी अवगाहनाका गुणकार घनांगुल है। मारणान्तिकसमुद्घातमें प्रतरांगुलरूप गुणकार देना चाहिये । वैक्रियिकपदसे आवलीके असंख्यातवें भागरूप प्रतिभागके द्वारा अपनी राशिका असंख्यातवां भाग लेना चाहिये ।

---

१ आह चेदेकः जीवस्थाने योगभंगे सप्तविधकाययोगस्वामिप्ररूपणायामौदारिककाययोगः औदारिकमिश्रकाययोगश्च तिर्यङ्मनुष्याणां, वैक्रियिककाययोगो वैक्रियिकमिश्रकाययोगश्च देवनारकाणामुक्तः, इह तिर्यङ्मनुष्याणामपीत्युच्यते, तदिदमार्षविरुद्धं, इत्यत्रोच्यते– न, अन्यत्रोपदेशात् । व्याख्याप्रज्ञप्तिदंडकेषु शरीरभंगे वायोरौदारिकवैक्रियिकतैजसकार्मणानि चत्वारि शरीराण्युक्तानि, मनुष्याणां च । एवमप्यार्षयोस्तयोर्विरोधः ? न विरोधः; अभिप्रायकत्वात् । जीवस्थाने सर्वदेवनारकाणां सर्वकालवैक्रियिकदर्शनात् तद्योगविधिरित्यभिप्रायः । नैवं तिर्यङ्मनुष्याणां लब्धिप्रत्ययंवैक्रियिकं सर्वेषां सर्वकालमस्ति कादाचित्कत्वाद् व्याख्याप्रज्ञप्तिदंडकेष्वस्तित्वमात्रमभिप्रेत्योक्तं । त. रा. वा. २, ४९.

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति जहण्णिया ओगाहणा आहुट्ठरयणीओ[1], उक्कस्सिया पंचसद-पणवीसुत्तरधणूणि[2]। एदाओ दो वि ओगाहणाओ भरह-इरावएसु चेव होंति, ण विदेहेसु, तत्थ पंचसदधणुस्सेधणियमा[3]। तत्तो थोवूणुस्सेधो वा विदेहसंजदरासी जदो सव्वुक्कस्सो होदि, सो पधाणो, पंचधणुस्स-दुस्सेहाविणाभावित्तादो। एत्थ अंगुल कदउस्सेहणवमभागो[4] विक्खंभो त्ति कट्टु परिट्ठयमद्धं करिय विक्खंभद्धेण गुणिय उस्सेहेण गुणिदे संखेज्जाणि घणंगुलाणि जादाणि। एदेहि संखेज्जघणंगुलेहि अप्पप्पणो रासिं गुणिदे इच्छिदखेत्तं होदि। णवरि आहारसरीरस्स उस्सेधो एया रयणी, उस्सेहदसमभागो तस्स विक्खंभो, दिव्वत्तादो। विहारे संखेज्जघणंगुलाणि सत्थाणसमाणोगाहणमुहमच्छिण्णपउमणालसुत्तसंताणं व मूलाहारसरीराणमंतरे जीवपदेसाणमवट्ठाणादो। ण च सरीरादो-गदजीवपदेसाणं पुणो

शंका– संयतासंयतोंके वैक्रियिकसमुद्घात कैसे संभव है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, विष्णुकुमार आदिमें विक्रियात्मक औदारिकशरीर देखा जाता है।

संयतासंयतोंमें भी मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त जीवराशि ओघसंयतासंयत राशिके असंख्यातवें भागप्रमाण होती है। इसके कारणका प्ररूपण पहले कर आये हैं। प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक जीवोंकी जघन्य अवगाहना साढ़े तीन रत्निप्रमाण है और उत्कृष्ट अवगाहना पांचसौ पच्चीस धनुष्य है। ये दोनों ही अवगाहनाएं भरत और ऐरावत क्षेत्रमें ही होती हैं, विदेहमें नहीं, क्योंकि, विदेहमें पांचसौ धनुषके उत्सेधका नियम है। अतः पांचसौ पच्चीस धनुषसे कुछ कम उत्सेधवाली विदेहक्षेत्रस्थ संयतराशि चूंकि सबसे अधिक होती है, इसलिये यहांपर वह राशि प्रधान है, क्योंकि, विदेहस्थ संयतराशिका पांचसौ धनुषकी ऊंचाईके साथ अविनाभावसंबन्ध पाया जाता है। यहांपर अंगुलोंमें किये गये (मनुष्योंके) उत्सेधका नौवां भाग विष्कंभ होता है, ऐसा समझकर विष्कंभकी परिधिको आधा करके और विष्कंभके आधेसे गुणित करके उत्सेधसे गुणित करनेपर संख्यात घनांगुल हो जाते हैं। इन संख्यात घनांगुलोंसे अपनी अपनी राशिके गुणित करनेपर इच्छित गुणस्थानसंबन्धी क्षेत्र होता है। इतनी विशेषता है कि आहारकशरीरका उत्सेध एक रत्निप्रमाण है। तथा उत्सेधके दशवें भागप्रमाण उसका विष्कंभ है, क्योंकि, यह शरीर दिव्यस्वरूप है। इसका विहारमें संख्यात घनांगुल क्षेत्र होता है। उस समय इस शरीरका मूल अर्थात् विष्कंभ और उत्सेध स्वस्थानस्वस्थानके समान अवगाहनाप्रमाण है, क्योंकि, मूल और आहारक शरीरके अन्तरालमें पद्मनालके अच्छिन्न सूत्रसंतानके समान जीवप्रदेशोंका अवस्थान पाया जाता है। शरीरसे

१ मध्यांगुलीकूर्परयोर्मध्ये प्रामाणिकः करः। बद्धमुष्टिकरो रत्निररत्निः सकनिष्ठिका। हलायु. कोष.

२ आहुट्ठहत्थपहुदी पणुवीसब्भहियपणसयधणूणि ॥ ति. प. १, २२.

३ पंचसयचावतुंगा × × ति. प ४, ५८.

४ प्रतिषु 'अंगुलकद' इति पाठः।

तत्थ पवेसाभावो, समुग्घादगदकेवलिजीवपदेसेहि वियहियारादो। एदाणि खेत्ताणि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो त्ति पमत्तादओ चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे अच्छंति, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। मारणंतियस्स सत्तरज्जूहि संखेज्जपदरंगुल-गुणिदइच्छिदसंजदरासी गुणेदव्वो। तेण मारणंतियसमुग्घादगदसंजदा माणुसलोगादो असंखेज्जगुणे खेत्ते अच्छंति। एवं सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-

---

निकले हुए जीवप्रदेशोंका फिरसे शरीरमें प्रवेश नहीं होता है, सो भी बात नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेपर समुद्घातगत केवलीके जीवप्रदेशोंके साथ व्यभिचार आ जाता है। ये सब क्षेत्र सामान्य आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं, इसलिये प्रमत्तसंयत आदि राशियां चार लोकोंके असंख्यातवें भाग क्षेत्रमें रहती हैं, तथा मानुषक्षेत्रके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहती हैं। मारणान्तिकसमुद्घातका क्षेत्र लानेके लिये जिस अभीष्ट संयतराशिका क्षेत्र लाना हो उसे संख्यात प्रतरांगुलोंसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसे सात राजुओंसे गुणित करना चाहिये। इस कारण मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त हुए संयत जीव मानुषलोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं।

विशेषार्थ— यहां प्रमत्तसंयत गुणस्थानवर्ती जीवोंका मारणान्तिकसमुद्घातसंबन्धी क्षेत्रके लानेके लिए अभीष्ट राशिको संख्यात प्रतरांगुलोंसे गुणित करके पुनः सात राजुओंसे गुणित करनेका विधान कहा है। इसका अभिप्राय यह है कि संयत जीव सौधर्मकल्पसे लेकर सर्वार्थसिद्धि पर्यन्त उत्पन्न होते हैं और इसीलिए वे वहांतक मारणान्तिकसमुद्घात भी कर सकते हैं। सर्वार्थसिद्धि मध्यलोकसे लगाकर कुछ कम ७ राजु ऊंची है। तथा एक संयतकी उत्कृष्ट अवगाहना भी संख्यात प्रतरांगुल प्रमाण ही होती है। अतः उत्कृष्ट मारणान्तिक-समुद्घातक्षेत्रकी अपेक्षा सात राजुओंसे संख्यात प्रतरांगुलोंके गुणित करनेका विधान किया गया है। एक संयतकी उत्कृष्ट अवगाहनाके प्रतरांगुल इस प्रकार आते हैं—

उत्सेध ५०० धनुष; विष्कम्भ $\frac{५००}{९}$ धनुष;

परिधि $$\frac{\frac{५००}{९} \times १६ + १६}{११३} + \frac{५००}{९} \times \frac{३}{१} = \frac{१७७६४४}{१०१७}$$

क्षेत्रफल $$\frac{१७७६४४}{१०१७} \times \left(\frac{५००}{९} \times \frac{१}{४}\right) = \frac{८८८१२०००}{३६६१२}$$ धनुष।

$$= \frac{८८८१२०००}{३६६१२} \times \frac{९६}{१} = \frac{८५२५९५२०००}{३६६१२}$$ प्रतरांगुल

सर्व संयत राशिका प्रमाण ८९९,९९९,९७ इतना है,। इसमेंसे प्रमत्तादि गुणस्थानोंकी यथायोग्य राशिके संख्यातवे भागप्रमाण राशि ही मारणान्तिकसमुद्घात करती है। अतएव उससे पूर्वमें निकाले गये एक अवगाहनाके प्रतरांगुलोंसे गुणित करनेपर भी संख्यात प्रतरांगुल ही

वेउव्वियाहार-मारणंतियसमुग्घादाणं उत्तं। णवरि तेजासमुग्घादस्स विक्खंभायामे णव बारहजोयणपमाणे कदंगुले अण्णोण्णं गुणिय बाहल्लेण गुणिदे तेजासमुग्घादखेत्तं होदि। एवं तप्पाओग्गसंखेज्जरूवेहि गुणिदे सव्वखेत्तसमासो होदि। ओवट्टणा पुव्वं व।

अप्पमत्तसंजदा सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाणत्था केवडि खेत्ते, चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। मारणंतिय-अप्पमत्ताणं पमत्तसंजदभंगो। अप्पमत्ते सेसपदा णत्थि। चदुण्हमुवसमा सत्थाणसत्थाण-मारणंतियपदेसु पमत्तसमा। चदुण्हं खवगाणं अजोगिकेवलीणं च सत्थाणसत्थाणं पमत्तसमं। खवगुवसामगाणं णत्थि वुत्तसेसपदाणि। खवगुवसामगाणं ममेदंभावविरहिदाणं कधं सत्थाणसत्थाणपदस्स संभवो? ण एस दोसो, ममेदंभावसमण्णिदगुणेसु तहा गहणादो। एत्थ पुण अवट्ठाणमेत्तगहणादो।

होते हैं। इस प्रकार मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त समस्त संयतोंका क्षेत्र संख्यात प्रतरांगुल गुणित सात राजु होता है, जब कि तिर्यक्लोक एक लाख योजनके सातवें भागप्रमाण मोटे जगत्प्रतरप्रमाण है। अतः उक्त मारणान्तिक समुद्घातका क्षेत्र चारों लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है। तथा मनुष्यलोक ४५ लाख चौड़ा और १ लाख योजन ही ऊंचा है। अतः संयतोंका मारणान्तिकक्षेत्र मनुष्यलोकसे असंख्यात गुणा सिद्ध होता है।

इस प्रकार उक्त क्षेत्र स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय, वैक्रियिक, आहारक और मारणान्तिकसमुद्घातवाले जीवोंका कहा। इतनी विशेषता है कि तैजससमुद्घातके नौ योजनप्रमाण विष्कंभ और बारह योजनप्रमाण आयाम क्षेत्रके किये हुए अंगुलोंका परस्पर गुणा करके सूच्यंगुलके संख्यातवें भागप्रमाण बाहल्यसे गुणित करनेपर तैजससमुद्घातका क्षेत्र होता है। इसे इसके योग्य संख्यातसे गुणित करनेपर तैजससमुद्घातके सर्वक्षेत्रका जोड़ होता है। यहांपर अपवर्तना पहलेके समान जाननी चाहिये।

स्वस्थानस्वस्थान और विहारवत्स्वस्थानरूपसे परिणत अप्रमत्तसंयत जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं और मानुषक्षेत्रके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं। मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त हुए अप्रमत्तसंयतोंका क्षेत्र मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त हुए प्रमत्तसंयतोंके क्षेत्रके समान होता है। अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें उक्त तीन स्थानोंको छोड़कर शेष स्थान नहीं होते हैं। उपशमश्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक जीव स्वस्थानस्वस्थान और मारणान्तिकसमुद्घात इन दोनों पदोंमें स्वस्थानस्वस्थान और मारणान्तिकसमुद्घातगत प्रमत्तसंयतोंके समान होते हैं। क्षपकश्रेणीके चार गुणस्थानवर्ती क्षपक और अयोगिकेवली जीवोंका स्वस्थानस्वस्थान प्रमत्तसंयतोंके स्वस्थानस्वस्थानके समान होता है। क्षपक और उपशामक जीवोंके उक्त स्थानोंके अतिरिक्त शेष स्थान नहीं होते हैं।

शंका— यह मेरा है, इस प्रकारके भावसे रहित क्षपक और उपशामक जीवोंके स्वस्थानस्वस्थान नामका पद कैसे संभव है?

सजोगिकेवली केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे, असंखेज्जेसु वा भागेसु, सव्वलोगे वा ॥ ४ ॥

एत्थ सजोगिकेवलिस्स सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाणाणं पमत्तभंगो। दंडगदो केवली केवडि खेत्ते, चउण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जदिगुणे। तं कधं ? अट्ठुत्तरसदपमाणंगुलाणि उस्सेधो उक्कस्सोगाहणकेवलीणं होदि। तस्स णवमभागो विक्खंभो १२ एत्तिओ होदि। तस्स परिट्ठओ सत्ततीस अंगुलाणि पंचाणउदि-तेरससदभागा ३७ ९५/११३। इमं विक्खंभचउब्भागेण गुणिदे मुहपदरंगुलाणि होंति। एदाणि देसूणचोद्दसरज्जूहि गुणिदे दंडखेत्तं होदि।

समाधान— यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, जिन गुणस्थानोंमें 'यह मेरा है' इस प्रकारका भाव पाया जाता है वहां वैसा ग्रहण किया है। परन्तु यहांपर अर्थात् क्षपक और उपशामक गुणस्थानोंमें अवस्थानमात्रका ग्रहण किया गया है।

सयोगिकेवली जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें, अथवा लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण क्षेत्रमें, अथवा सर्वलोकमें रहते हैं ॥ ४ ॥

यहांपर सयोगिकेवलीका स्वस्थानस्वस्थान और विहारवत्स्वस्थान क्षेत्र प्रमत्तसंयतोंके स्वस्थानस्वस्थान और विहारवत्स्वस्थान क्षेत्रके समान होता है। दंडसमुद्घातको प्राप्त हुए केवली जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और अढ़ाईद्वीपसंबन्धी लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं।

शंका— दंडसमुद्घातको प्राप्त हुए केवलियोंका उक्त क्षेत्र कैसे संभव है।

समाधान— उत्कृष्ट अवगाहनासे युक्त केवलियोंका उत्सेध एकसौ आठ प्रमाणांगुल होता है और उसका नौवां भाग अर्थात् बारह प्रमाणांगुल विष्कंभ होता है इसकी परिधि सैंतीस अंगुल और एक अंगुलके एकसौ तेरह भागोंमेंसे पंचानवे भागप्रमाण ३७ ९५/११३ होती है। इसे विष्कंभ बारह अंगुलके चौथे भाग तीन अंगुलोंसे गुणित करनेपर मुखरूप बारह अंगुल लंबे और बारह अंगुल चौड़े गोल क्षेत्रके प्रतरांगुल होते हैं। इन्हें कुछ कम चौदह राजुओंसे गुणित करनेपर दंड क्षेत्रका प्रमाण आता है। यह एक केवलीके दंडक्षेत्रका प्रमाण हुआ।

उदाहरण— व्यास १२ अंगुल; अतएव गाथा नं. १४ के अनुसार उसकी परिधिका

प्रमाण— $$\frac{१२ \times १६ + १६}{११३} + \frac{३६}{१} = \frac{४२७६}{११३} = ३७\frac{९५}{११३}$$ अंगुल।

क्षेत्रफल— $$\frac{४२७६}{११३} \times \frac{१२}{४} \text{ (व्यासका चतुर्थांश) } = \frac{१२८२८}{११३}$$ प्रतरांगुल।

अतएव दंडसमुद्घातगत केवलीका क्षेत्रप्रमाण $= \frac{१२८२८}{११३} \times$ देशोन १४ राजु।

एदं संखेज्जरूवगुणं तेरासियकमेण चदुहि लोगेहि भागे हिदे तेसिं लोगाणमसंखेज्जदि-भागो आगच्छदि। माणुसलोगेण भागे हिदे असंखेज्जाणि माणुसखेत्ताणि आगच्छंति। णवरि पलियंकेण दंडसमुग्घादगदकेवलिस्स विक्खंभो पुव्वविक्खंभादो तिगुणो होदि। तस्स पमाणमेदं ३६। एदस्स परिट्ठओ तेरहुत्तरसदंगुलाणि सत्तावीस-तेरहुत्तरसदभागा ११३ $\frac{२७}{११३}$। सेसं पुव्वं व।

कवाडगदो केवली केवडि खेत्ते, तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, (तिरिय-

विशेषार्थ— यहांपर दंडसमुद्घात क्षेत्रका प्रमाण केवलीकी उत्कृष्ट अवगाहना १०८ प्रमाणांगुल लेकर बतलाया है। किन्तु इससे पूर्व ही केवलीकी उत्कृष्ट अवगाहना ५२५ धनुष प्रमाण कही गई है। चूंकि उत्सेधांगुलसे प्रमाणांगुल ५०० गुणा होता है, इसलिये ५२५ धनुषके प्रमाणांगुल $\frac{५२५ \times ९६}{५००} = १००\frac{४}{५}$ होते हैं। वर्तमान प्रकरणमें विदेहक्षेत्रकी संयतराशि प्रधान है। अतएव यदि विदेहसम्बन्धी अवगाहना ली जाय, तो वह $\frac{५०० \times ९६}{५००} = ९६$ प्रमाणांगुल ही होती है। १०८ प्रमाणांगुलके धनुष $\frac{१०८ + ५००}{९६} = ५६२\frac{१}{२}$ होते हैं जो उक्त ५२५ धनुषके प्रमाणसे बढ़ जाते हैं। इस वैषम्यका कारण विचारणीय है।

एक साथ समुद्घात करनेवाले संख्यात केवलियोंके दंडक्षेत्रका प्रमाण लानेके लिये इसे संख्यातसे गुणित करें। इस प्रकार जो क्षेत्र उत्पन्न हो उसे त्रैराशिकके क्रमसे सामान्यलोक आदि चार लोकोंसे भाजित करनेपर उन चार लोकोंमेंसे प्रत्येक लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण दंडक्षेत्र आता है। तथा उक्त दंडक्षेत्रको मानुषलोकसे भाजित करने पर असंख्यात मानुषक्षेत्र लब्ध आते हैं। इतनी विशेषता है कि पल्यंकासनसे दंडसमुद्घातको प्राप्त हुए केवलीका विष्कंभ पहले कहे हुए बारह अंगुलप्रमाण विष्कंभसे तिगुना होता है। उसका प्रमाण ३६ अंगुल है। इसकी परिधि एकसौ तेरह अंगुल और एक अंगुलके एकसौ तेरह भागोंमेंसे सत्ताईस भागप्रमाण ११३ $\frac{२७}{११३}$ है।

उदाहरण— व्यास ३६; अतएव गाथा नं. १४ के अनुसार परिधिका प्रमाण—

$$\frac{३६ \times १६ + १६}{११३} + \frac{१०८}{१} = ११३\frac{२७}{११३}$$

शेष कथन पूर्वके समान है।

कपाटसमुद्घातको प्राप्त हुए केवली कितने क्षेत्रमें रहते हैं? सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें, तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। अब यहांपर कपाटसमुद्घातको प्राप्त हुए केवलीका क्षेत्र लानेका विधान कहते हैं—

लोगस्स संखेज्जदिभागे,) अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे। एत्थ कवाडगदकेवलिस्स खेत्ताणयणविहाणं वुच्चदे– केवली पुव्वाहिमुहो वा उत्तराहिमुहो वा समुग्घादं करेंतो जदि पलियंकेण समुग्घादं करेदि, तो कवाडबाहल्लं छत्तीसंगुलाणि होंति। अह जइ काउस्सग्गेण कवाडं करेदि, तो बारहंगुलबाहल्लं कवाडं होदि। तत्थ ताव पुव्वाहिमुहकेवलिस्स कवाडखेत्ताणयणं भण्णमाणे चोद्दसरज्जुआयामं सत्तरज्जुविक्खंभं छत्तीसंगुलबाहल्लं खेत्तं ठविय मज्झे छेत्तूण एक्कखेत्तस्सुवरि बिदियखेत्तं ठविदे बाहत्तरिअंगुलबाहल्लं जगपदरं होदि। काउस्सग्गेण ट्ठिदकेवलिकवाडखेत्तं चउव्वीसंगुलबाहल्लं होदि। उत्तराहिमुहो होदूण पलियंकेण समुग्घादगदकेवलिकवाडखेत्तं छत्तीसंगुलबाहल्लं जगपदरं होदि। इयरस्स १२ बारहंगुलबाहल्लं, वेयणाए विणा तिगुणत्ताभावा। एदं खेत्तं तेरासियकमेण तिण्हं लोगाणं पमाणेण कीरमाणे तेसिं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स पुण संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणं होदि।

पदरगदो केवली केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जेसु भागेसु। लोगस्स असंखेज्जदिभागं वादवलयरुद्धखेत्तं मोत्तूण सेसबहुभागेसु अच्छदि त्ति जं वुत्तं

केवली जिन पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख होकर समुद्धातको करते हुए यदि पल्यंकासनसे समुद्धातको करते हैं तो कपाटक्षेत्रका बाहल्य छत्तीस अंगुल होता है और यदि कायोत्सर्गसे कपाटसमुद्धात करते हैं तो बारह अंगुलप्रमाण बाहल्यवाला कपाटसमुद्धात होता है। इनमेंसे पहले पूर्वाभिमुख केवलीके कपाटक्षेत्रके लानेकी विधिका कथन करनेपर चौदह राजु लंबे, सात राजु चौड़े और छत्तीस अंगुल मोटे क्षेत्रको स्थापित करके उसे चौदह राजु लंबाईमेंसे बीचमें सात राजुके ऊपर छिन्न करके एक क्षेत्रके ऊपर दूसरे क्षेत्रको स्थापित कर देनेपर बहत्तर अंगुल मोटा जगत्प्रतर हो जाता है और कायोत्सर्गसे पूर्वाभिमुख स्थित हुए केवलीका कपाटक्षेत्र चौवीस अंगुल मोटा जगत्प्रतर होता है। उत्तराभिमुख होकर पल्यंकासनसे समुद्धातको प्राप्त हुए केवलीका कपाटक्षेत्र छत्तीस अंगुल मोटा जगत्प्रतरप्रमाण होता है। तथा इतरका अर्थात् उत्तराभिमुख होकर कायोत्सर्गसे समुद्धातको करनेवाले केवलीका कपाटक्षेत्र बारह अंगुल मोटा जगत्प्रतरप्रमाण लंबा चौड़ा होता है, क्योंकि, वेदनासमुद्धातको छोड़कर जीवके प्रदेश तिगुने नहीं होते हैं। यह उपर्युक्त कपाटसमुद्धातगत केवलीका क्षेत्र त्रैराशिकक्रमसे सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके प्रमाणरूपसे करनेपर उन तीन लोकोंमेंसे प्रत्येक लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है। तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण है और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा है।

प्रतरसमुद्धातको प्राप्त हुए केवली जिन कितने क्षेत्रमें रहते हैं? लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं। लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण वातवलयसे रुके हुए क्षेत्रको छोड़कर लोकके शेष बहुभागोंमें रहते हैं, यह इस कथनका अभिप्राय है। घनलोकका प्रमाण

होदि । घणलोगपमाणं तेदालीसुत्तरतिसद ३४३ घणरज्जूओ । अधोलोगपमाणं छण्णवुदिसदघणरज्जूओ १९६ । उड्ढलोगपमाणं सत्तेतालसदघणरज्जूओ १४७ । उड्ढलोगपमाणाणयणे सुत्तगाहा–

मूलं मज्झेण गुणं मुहसहिदद्धमुस्सेधकदिगुणिदं ।
घणगणिदं जाणेज्जो मुदिंगसंठाणखेत्तम्हि ॥ १५ ॥

एदिस्से गाहाए अत्थो वुच्चदे– मूलं मुदिंगखेत्तस्स बुंधवित्थारं, मज्झेण मुदिंगमज्झपंचरज्जूहि सह, गुणं जुदं कादव्वं । मुहं मुदिंगमुहरुंधपमाणं, सहिदं मुदिंगमज्झेण जुदं कादूण, अद्धं अद्धं करिय समीकदं, उस्सेधकदिगुणिदं उस्सेधवग्गेण गुणिदे कदे, मुदिंगखेत्तफलं होदि ।

मुह-मुहतलसमासअद्धं उस्सेधगुणं गुणं च वेहेण ।
घणगणिदं[1] जाणेज्जा वेत्तासणसंठिए खेत्ते ॥ १६ ॥

एदीए गाहाए अधोलोगघणगणिदमाणेज्जो ।

[2]संपहि लोगपेरंतट्ठिदवादवलयरुद्धखेत्ताणयणविधाणं वुच्चदे– लोगस्स तले तिण्हं वादाणं बाहल्लं पादेक्कं वीससहस्सजोयणमेत्तं । तं सव्वमेगट्ठं कदे

तीनसौ तेतालीस ३४३ घनराजु है । अधोलोकका प्रमाण एकसौ छयानवे १९६ घनराजु है । ऊर्ध्वलोकका प्रमाण एकसौ सैंतालीस १४७ घनराजु है । अब ऊर्ध्वलोकके प्रमाणको लानेके लिये नीचे सूत्रगाथा दी जाती है–

मूलके प्रमाणको मध्यके प्रमाणसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें मुखका प्रमाण जोड़कर आधा करो । पुनः इसे उत्सेधके वर्गसे गुणित करो । वह मृदंगाकार क्षेत्रमें घनफल लानेका गणित जानना चाहिये ॥ १५ ॥

अब इस गाथाका अर्थ कहते हैं– मूल अर्थात् मृदंगक्षेत्रके बुध्नविस्तारको मृदंगक्षेत्रके मध्यविस्तार पांच राजुओंके साथ गुणित करके जोड़ दें । इसका तात्पर्य यह हुआ कि मुखको अर्थात् मृदंगाकार क्षेत्रके मुखविस्तारके प्रमाणको मृदंगके मध्यविस्तार पांच राजुओंसे सहित अर्थात् युक्त करके, आधा आधा करके समीकरण कर लें । अनन्तर उसे उत्सेधके वर्गसे गुणित करनेपर मृदंगक्षेत्रका घनफल होता है । (देखो विशेषार्थ पृष्ठ २१)

मुखके प्रमाण और तलभागके प्रमाणको जोड़कर आधा करें । पुनः इसे उत्सेधसे गुणित करके वेधसे गुणित करें । यह वेत्रासनके आकारवाले क्षेत्रमें घनफल लानेकी प्रक्रिया जानना चाहिये ॥ १६ ॥

इस गाथासे अधोलोकका घनगणित ले आना चाहिये ।

---

१ प्रतिषु ' गुणिदं ' इति पाठः ।

२ इत आरभ्याग्रेतनो वातवलयप्ररूपकः प्रबन्धस्त्रिलोकप्रज्ञप्तेः प्रथमाधिकारगतेन अनेन प्रकरणेन शब्दशः समानः ।

सट्ठिजोयणसहस्सबाहल्लं जगपदरं होइ[1] । णवरि दोसु वि अंतेसु सट्ठिसहस्सजोयणुस्सेहपरिहाणिखेत्तेण ऊणं एदमजोएदूण सट्ठिसहस्सबाहल्लं जगपदरमिदि संकप्पिय तच्छेदूण पुध ट्ठवेदव्वं ६००००। पुणो एगरज्जुस्सेधेण सत्तरज्जुआयामेण सट्ठिजोयणसहस्सबाहल्लेण दोसु वि पासेसु ट्ठिदवादखेत्तं बुद्धीए पुध करिय जगपदरपमाणेण बद्धे वीससहस्साहियजोयणलक्खस्स सत्तभागबाहल्लं जगपदरं होदि १२००००/७ ।[2] तं

अब लोकके पर्यन्त भागमें स्थित वातवलयसे रुके हुए क्षेत्रके लानेकी विधिको बतलाते हैं– लोकके तलभागमें तीनों वायुओंमेंसे प्रत्येक वायुका बाहल्य बीस हजार योजन प्रमाण है। उस सब बाहल्यको एकत्रित करनेपर साठ हजार योजन बाहल्यप्रमाण जगत्प्रतर होता है। इतनी विशेषता है कि पूर्व और पश्चिमके दोनों ही पार्श्वभागोंमें साठ हजार योजन ऊंचाईतक हानिरूप क्षेत्रकी अपेक्षा उपर्युक्त क्षेत्र हानिरूप है। फिर भी इस उन क्षेत्रकी गणना न करके और उसे साठ हजार योजन मोटा जगत्प्रतरप्रमाण संकल्प कर उसे छिन्न करके पृथक् स्थापित कर देना चाहिये।

उदाहरण– अधोलोकका तलभाग ७ राजु लम्बा और ७ राजु चौड़ा है, अतएव उसका क्षेत्रफल जगत्प्रतरप्रमाण होगा। तलभागमें प्रत्येक वातवलय २०००० हजार योजन मोटा है, इसलिये तीनों वातवलयोंकी मोटाई ६०००० योजन होती है। इसे जगत्प्रतरसे गुणित कर देनेपर साठ हजार योजनोंके जितने प्रदेश होंगे उतने जगत्प्रतर लब्ध आते हैं। यही तलभागके वातरुद्ध क्षेत्रका घनफल है।

पुनः एक राजु उत्सेधरूप, सात राजु आयामरूप और साठ हजार योजन बाहल्यरूपसे उत्तर और दक्षिणसम्बन्धी दोनों ही पार्श्वभागोंमें स्थित वातक्षेत्रको बुद्धिसे पृथक् करके उसे जगत्प्रतरप्रमाणसे निबद्ध करनेपर एक लाख बीस हजार योजनोंके सातवें भाग बाहल्यप्रमाण जगत्प्रतर होता है।

उदाहरण– अधोलोकके तलभागसे ऊपर एक राजुप्रमाण वातवलयसे रुके हुए क्षेत्रका घनफल– उत्तर और दक्षिणमें पूर्वसे पश्चिमतक प्रत्येक दिशामें जगत्श्रेणीप्रमाण लंबा; १ राजु ऊंचा; तीनों वातवलयोंका बाहल्य ६०००० योजन; दोनों दिशाओंके वायुरुद्ध क्षेत्र १२०००० योजनोंके प्रमाणमें सातका भाग देनेपर १७१४२ ६/७ योजन लब्ध आते हैं और ऊंचाईमें राजुके स्थानमें जगत्श्रेणीका प्रमाण हो जाता है। अतएव १७१४२ ६/७ योजनोंके जितने प्रदेश हो उतने जगत्प्रतरप्रमाण उत्तर और दक्षिणमें अधोलोकके तलभागसे एक राजु ऊंचे क्षेत्रतक वातवलयरुद्ध क्षेत्रका घनफल होता है।

१ लोयतले वादतये वाहल्लं सट्ठिजोयणसहस्सं। सेढिभुजकोडिगुणिदं किंचूणं वाउखेत्तफलं ॥ त्रि. सा. १२७.

२ किंचूणरज्जुवासो जगसेढीदीहरं हवे वेही। जोयणसट्ठिसहस्सं सत्तमखिदिपुव्व अवरे य ॥ जगपदरसत्तभागं सट्ठिसहस्सेहि जोयणेहि गुणं। विगगुणिदमुभयपासे वादफलं पुव्व अवरे य ॥ त्रि. सा. १२८, १२९.

पुव्विल्लखेत्तस्सुवरि ट्ठविदे चालीसजोयणसहस्साहिय पंचण्हं लक्खाणं सत्तभागबाहल्लं जगपदरं होदि $\frac{५४००००}{७}$ । पुणो अवरासु दोसु दिसासु एगरज्जुस्सेधेण तले सत्तरज्जुआयामेण मुहे सत्तभागाहियछरज्जुरुंदत्तेण सट्ठिजोयणसहस्सबाहल्लेण ट्ठिदवादवलयखेत्ते जगपदरपमाणेण कदे वीसजोयणसहस्साहियपंचवंचासजोयणलक्खाणं तेदालीस-तिसदभागबाहल्लं जगपदरं होदि $\frac{५५२००००}{३४३}$ ।[1] एदं पुव्विल्लखेत्तस्सुवरि पक्खित्ते एगूणवीसलक्ख-असीदिसहस्सजोयणाहिय-तिण्हं कोडीणं तेदालीस-तिसद-भागबाहल्लं जगपदरं होदि $\frac{३११८००००}{३४३}$ ।[2] पुणो सत्तरज्जुविक्खंभ-तेरहरज्जुआयाम-

इस घनफलको पहले तलभागके घनफलरूपसे आये हुए क्षेत्रमें मिला देनेपर पांच लाख चालीस हजार योजनोंके सातवें भागप्रमाण बाहल्यरूप जगत्प्रतर होता है।

उदाहरण– $६०००० + \frac{१२००००}{७} = \frac{५४००००}{७}$ योजन मोटा जगत्प्रतर।

पुनः दूसरी दो अर्थात् पूर्व और पश्चिम दिशाओंमें तलभागसे एक राजु ऊंचे, तलभागमें सात राजु लंबे, एक राजु ऊपर आकर मुखमें एक राजुके सातवें भाग अधिक छह राजु लंबे और साठ हजार योजन बाहल्यरूपसे स्थित वातवलयक्षेत्रको जगत्प्रतरप्रमाणसे करनेपर पचवन लाख वीस हजार योजनोंके तीनसौ तेतालीसवें भागप्रमाण बाहल्यरूप जगत्प्रतर होता है।

उदाहरण– $\frac{४९}{७} + \frac{४३}{७} = \frac{९२}{७}$; $\frac{९२}{७} \div \frac{२}{१} = \frac{९२}{१४}$; $\frac{९२}{१४} \times \frac{२}{१} = \frac{९२}{७}$;

$\frac{९२}{७} \times ६०००० = \frac{५५२००००}{७}$ । इसे जगत्प्रतरप्रमाणसे करनेके लिये ४९ का भाग देनेपर $\frac{५५२००००}{३४३}$ योजनोंके जितने प्रदेश होंगे उतने जगत्प्रतर लब्ध आ जाते हैं। पूर्व और पश्चिममें तलभागसे एक राजुतक वातरुद्ध क्षेत्रका यही घनफल है।

इसे पूर्वोक्त घनफलरूपसे आये हुए क्षेत्रमें मिला देनेपर तीन करोड़ उन्नीस लाख अस्सी हजार योजनोंके तीनसौ तेतालीसवें भागप्रमाण बाहल्यरूप जगत्प्रतर होता है।

उदाहरण– $\frac{५४००००}{७} + \frac{५५२००००}{३४३} = \frac{३११८००००}{३४३}$ योजन मोटा जगत्प्रतर।

---

१ उदयमुहभूमिवेहो रज्जुससत्तमछरज्जुसेढी य। जोयणसट्ठिसहस्सं सत्तमखिदिदक्खिणुत्तरदो ॥ तस्स फलं जगपदरो सट्ठिसहस्सेहि जोयणेहि हदो। वाणउदिगुणो समघणसंमजिदे उभयपासम्हि ॥ त्रि. सा. १३०, १३१.

२ सेढी छरज्जु चोद्दस जोयणमायामवासमुस्सेहं। पुव्ववरवासजुगले सत्तमदो तिरियलोगो त्ति ॥ तव्वाद-रुद्धखेत्तं जोयणचउवीसगुणिदजगपदरं। उभयदिसासंजणिदं णादव्वं गणिदकुसलेहिं ॥ त्रि. सा. १३२, १३३.

सोलहवारह-सोलहवारहजोयणबाहल्लेण दोसु वि पासेसु ट्ठिदवादखेत्ते जगपदरपमाणेण कदे चउसट्ठिसदजोयणूण-अट्ठारहसहस्सजोयणाणं तेदालीस-तिसदभागबाहल्लं जगपदरं उप्पज्जदि $\frac{१७८३६}{३४३}$ । पुणो सत्तभागाहिय-छरज्जुमूलविक्खंभेण छरज्जुउस्सेधेण एगरज्जुमुहेण सोलह-बारहजोयणबाहल्लेण दोसु वि पासेसु ट्ठिदवादखेत्तं जगपदरपमाणेण कदे बादालीसजोयणसदस्स तेदालीस-तिसदभागबाहल्लं जगपदरं होदि $\frac{४२००}{३४३}$ ।[1] पुणो एगपंच-एगरज्जुविक्खंभेण सत्तरज्जुउस्सेधेण बारह-सोलह-बारहजोयणबाहल्लेण उवरिमदोसु वि पासेसु ट्ठिदवादखेत्तं जगपदरपमाणेण कदे अट्ठासीदिसमहिय-

पुनः उत्तर और दक्षिणमें पूर्वसे पश्चिमतक सात राजु विष्कंभरूपसे, सातवीं पृथिवीके तलभागसे लोकान्ततक तेरह राजु आयामरूपसे और अधोलोककी अपेक्षा सोलह, बारह और ऊर्ध्वलोककी अपेक्षा सोलह, बारह योजन बाहल्यरूपसे दोनों ही पार्श्वभागोंमें स्थित वातक्षेत्रको जगत्प्रतररूपसे करनेपर एकसौ चौंसठ योजन कम अठारह हजार योजनोंके तीनसौ तेतालीसवें भागप्रमाण बाहल्यरूप जगत्प्रतर होता है।

उदाहरण— $१३ \times ७ = ९१$; $९१ \times १४ = १२७४$; $१२७४ \times २ = २५४८$। इसे जगत्प्रतररूपसे करनेके लिये सातसे गुणा करे और तीनसौ तेतालीस का भाग दें, तब $\frac{१७८३६}{३४३}$ योजन मोटा जगत्प्रतर आता है। यह उत्तर और दक्षिणमें सातवीं पृथिवीसे लेकर लोकान्ततक वातरुद्ध क्षेत्रका घनफल होता है।

पुनः पूर्व और पश्चिम दिशामें सातवीं पृथिवीके पास एक राजुके सातवें भाग अधिक छह राजुप्रमाण मूलमें विष्कंभरूपसे छह राजु उत्सेधरूपसे, मध्यलोकके पास एक राजु मुखरूपसे और सोलह, बारह योजनप्रमाण बाहल्यरूपसे दोनों ही पार्श्वोंमें स्थित वातक्षेत्रको जगत्प्रतरप्रमाणसे करनेपर ब्यालीससौ योजनोंके तीनसौ तेतालीसवें भागप्रमाण बाहल्यरूप जगत्प्रतर होता है।

उदाहरण— $\frac{४३}{७} + \frac{७}{७} = \frac{५०}{७}$; $\frac{५०}{७} \div \frac{२}{१} = \frac{५०}{१४}$; $\frac{५०}{१४} \times \frac{२}{१} = \frac{५०}{७}$; $\frac{५०}{७} \times १४ = \frac{७००}{७}$; $\frac{७००}{७} \times ६ = \frac{४२००}{७}$; इसे जगत्प्रतररूपसे करनेपर ४९ का भाग देनेसे $\frac{४२००}{३४३}$ योजनोंके जितने प्रदेश हों उतने जगत्प्रतर लब्ध आ जाते हैं। पूर्व और पश्चिममें सातवीं पृथिवीसे मध्यलोकतक वायुरुद्ध क्षेत्रका यही घनफल है।

---

१ उदयं भूमुह वेहो छरज्जु सत्तमछरज्जु रज्जू य। जोयण चोद्दस सत्तमतिरियो त्ति हु दक्खिणुत्तरदो ॥ तत्थाणिलखेत्तफलं उभये पासम्मि होइ जगपदरं। छस्सयजोयणगुणिदं पविभत्तं सत्तवग्गेण त्रि. सा. १३४, १३५

पंचजोयणसदाणं एगूणवंचासभागबाहल्लं जगपदरं होदि $\frac{५८८}{४९}$ ।[1] उवरि रज्जुविक्खंभेण सत्तरज्जुआयामेण किंचूणजोयणबाहल्लेण ट्ठिदवादखेत्तं जगपदरपमाणेण कदे ति-उत्तर-तिसदाणं वेसहस्स-विसद-चालीसभागबाहल्लं जगपदरं होदि $\frac{३०३}{२२४०}$ ।[2] एवं सव्वमेगत्थ मेलाविदे चउवीसकोडिसमहियसहस्सकोडीओ एगूणवीसलक्ख-तेसीदिसहस्स-चदुसद - सत्तासीदिजोयणाणं णवसहस्स-सत्तसय - सट्ठिरूवाहियलक्खाए अवहिदेगभागबाहल्लं जगपदरं होदि $\frac{१०२४१९८३४८७}{१०९७६०}$ ।[3] एवं वादरुद्धक्खेत्तं घणलोगम्हि

पुनः मध्यलोकके पास एक राजु; ब्रह्मलोकके पास पांच राजु और लोकान्तमें एक राजु विष्कंभसे, सात राजु उत्सेधरूपसे तथा, बारह, सोलह और बारह योजनप्रमाण बाहल्यरूपसे ऊर्ध्वलोकके पूर्व और पश्चिम दोनों ही पार्श्वोंमें स्थित वातक्षेत्रको जगत्प्रतरप्रमाणसे करने पर पांचसौ अठासी योजनोंके उनचासवें भाग बाहल्यरूप जगत्प्रतर होता है।

उदाहरण— ५ + १ = ६; ६ ÷ २ = ३; ३ × ७ = २१; २१ × २ = ४२; ४२ × १४ = ५८८ इसे जगत्प्रतरप्रमाणसे करने पर ४९ का भाग देनेसे $\frac{५८८}{४९}$ योजनोंके जितने प्रदेश हों उतने जगत्प्रतर लब्ध आते हैं। यही ऊर्ध्वलोकके पूर्व और पश्चिम दो दिशाओंके वातरुद्ध क्षेत्रका घनफल है।

लोकके उपरिम भागमें एक राजु विष्कंभरूपसे, सात राजु आयामरूपसे, कुछ कम एक योजन बाहल्यरूपसे स्थित वातक्षेत्रको जगत्प्रतरप्रमाणसे करने पर तीनसौ तीन योजनोंके दो हजार दोसौ चालीसवें भागप्रमाण बाहल्यरूप जगत्प्रतर होता है

उदाहरण— $१ \times ७ \times \frac{३०३}{३२०} \div \frac{७}{१} = \frac{३०३}{२२४०}$ यही लोकके अग्रभागके वातरुद्धक्षेत्रका घनफल है।

इस सर्व घनफलको एकत्रित करनेपर एक हजार चौबीस करोड़ उन्नीस लाख तेरासी हजार चारसौ सत्तासी योजनोंमें एक लाख नौ हजार सातसौ साठका भाग देनेपर जो एक भाग लब्ध आवे उतने योजनप्रमाण बाहल्यरूप जगत्प्रतर होता है।

$$\text{उदाहरण—}\frac{३११९८००००}{३४४} + \frac{१७८३६}{३४४} + \frac{४२००}{३४३} + \frac{५८८}{४९} + \frac{३०३}{२२४०} = \frac{१०२४१९८३४८७}{१०९७६०}$$

योजन बाहल्यरूप जगत्प्रतर लोकके चारों ओर वातरुद्धक्षेत्रका घनफल होता है।

---

१ आउड्ढरज्जुसेढो जोयण चोद्दस्स य वासमुजवेहो। बम्हो त्ति पुव्व-अवरे फलमेदं चदुगुणं सव्वं ॥ पंचाहुट्ठिगिरज्जू भूतुंगमुहं विसत्तजोयणयं। वेहो तं चउगुणिदं खेत्तफलं दक्खिणुत्तरदो ॥ त्रि. सा. १३६, १३७.

२ वासुदयभुजं रज्जू इगिजोयणवीसतिसदखंडेसु। सतितिसदं सेढी फलमीसिपमारुवरि दंडवाऊणं ॥ त्रि. सा. १३८.

३ सत्तासीदिचदुस्सदसहस्सतेसीदिलक्खउगवीसं। चउवीसहियं कोडिसहस्सगुणियं तु जगपदरं ॥ सट्ठीसत्तसएहि णवयसहस्सेगलक्खभजियं तु। सव्वं वादारुद्धं गणियं भणियं समासेण ॥ त्रि. सा. १३९–१४०.

अवणिदे पदरगदकेवलिखेत्तं देसूणलोगो होदि। एदं पदरगदकेवलिखेत्तमधोलोगपमाणेण कदे वे अधोलोगा अधोलोगस्स चदुब्भागेण सादिरेगेण ऊणया। उड्ढलोगपमाणेण कदे दुवे उड्ढलोगा उड्ढलोगस्स तिभागेण देसूणेण सादिरेगेण।

लोगपूरणगदो केवली केवडि खेत्ते, सव्वलोगे।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे[1] ॥ ५ ॥

इस वातरुद्धक्षेत्रको घनलोकमेंसे घटा देनेपर प्रतरसमुद्घातको प्राप्त केवलीका क्षेत्र कुछ कम लोकप्रमाण होता है। प्रतरसमुद्घातको प्राप्त केवलीका यह क्षेत्र अधोलोकके प्रमाणरूपसे करनेपर कुछ अधिक अधोलोकके चौथे भागसे कम दो अधोलोकप्रमाण होता है। तथा इसे ही ऊर्ध्वलोकके प्रमाणरूपसे करनेपर ऊर्ध्वलोकके कुछ कम तीसरे भागसे अधिक दो ऊर्ध्वलोकप्रमाण होता है।

विशेषार्थ– जगत्श्रेणीके जितने प्रदेश हों उतने जगत्प्रतरप्रमाण सर्वलोक है। इसमेंसे $\frac{१०२४१९८३४८७}{१०९७६०}$ योजनप्रमाण जगत्प्रतरोंके घटा देनेपर प्रतरसमुद्घातको प्राप्त केवलीका क्षेत्र होता है। अधोलोकका प्रमाण १९६ घनराजु है, इसलिये यदि इसे अधोलोकके प्रमाणरूपसे किया जाय तो दो अधोलोकोंके प्रमाण ३९२ घनराजुओंमेंसे $\frac{१०२४१९८३४८७}{१०९७६०}$ योजनप्रमाण जगत्प्रतर अधिक अधोलोकके चौथे भागप्रमाण ४९ घनराजु घटा देनेपर प्रतरसमुद्घातको प्राप्त केवलीका क्षेत्र आ जाता है। ऊर्ध्वलोकका प्रमाण १४७ घनराजु है, इसलिये यदि इस क्षेत्रको ऊर्ध्वलोकके प्रमाणरूपसे किया जाय तो ऊर्ध्वलोकके एक तिहाई घनराजु ४९ मेंसे $\frac{१०२४१९८३४८७}{१०९७६०}$ योजनप्रमाण जगत्प्रतरोंको घटाकर जितना शेष रहे उसे दो ऊर्ध्वलोकके प्रमाण २९४ घनराजुओंमेंसे जोड़ देनेपर प्रतरसमुद्घातको प्राप्त केवलीका क्षेत्र आ जाता है।

लोकपूरणसमुद्घातको प्राप्त केवली भगवान् कितने क्षेत्रमें रहते हैं? सर्व लोकमें रहते हैं।

आदेशकी अपेक्षा गत्यनुवादसे नरकगतिमें नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानके जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं॥ ५॥

---

१ गत्यनुवादेन नरकगतौ सर्वासु पृथिवीषु नारकाणां चतुर्षु गुणस्थानेषु लोकस्यासंख्येयभागः। स. सि. १, ८.

एत्थ 'आदेसेण' गहणं ओघपडिसेधफलं। गदिगहणमिंदियादिपडिसेहफलं। अणुवादगहणं सुत्तस्स अकट्टिवुत्तपरूवणफलं। णिरयगदिणिद्देसो देवगदियादिपडिसेध-फलो। णेरइएसु त्ति वयणं तत्थतणपुढविकाइयादिपडिसेधफलं। लोगस्स असंखेज्जदि-भागे इदि वुत्ते सेसलोगाणं कधं गहणं होदि? ण, खेत्त-फोसणसुत्ताणं देसामासिगत्तादो।

संपदि सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगद-मिच्छाइट्ठी केवडि खेत्ते, चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे। एदस्सअत्थपरूवणट्ठमेत्थोगाहणा वुच्चदे। तं जहा– पढमाए पुढवीए पढमपत्थडम्हि णेरइयाणमुस्सेधो तिण्णि हत्था। तेरहमपत्थडे सत्त धणू तिण्णि हत्था छ अंगुलाणि णेरइयाणमुस्सेधो होदि[1]।

मुह-भूमिविसेसम्हि दु उच्छेहभजिदम्हि सा हवे वड्ढी।
वड्ढी इच्छागुणिदा मुहसहिदा सा फलं होदि ॥ १७ ॥

इस सूत्रमें आदेश पदके ग्रहण करनेका फल ओघका प्रतिषेध करना है। गति पदके ग्रहण करनेका फल इन्द्रियादिका प्रतिषेध करना है। अनुवाद पदके ग्रहण करनेका फल सूत्रके अकर्तृकत्वका प्ररूपण करना है। नरकगति पदके निर्देश करनेका फल देवगति आदिका प्रतिषेध करना है। नारकियोंमें इस प्रकारके वचनके देनेका फल वहांके क्षेत्रमें रहनेवाले पृथिवीकायिक आदिका प्रतिषेध करना है।

शंका– लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं, केवल इतना कहनेपर शेष लोकोंका ग्रहण कैसे हो सकता है?

समाधान– नहीं, क्योंकि, क्षेत्र और स्पर्शन अनुयोगद्वारके सूत्र देशामर्शक हैं, इसलिये 'लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं' इतने पदके कहनेसे शेष लोकोंका भी ग्रहण हो जाता है।

अब विशेष पदोंकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि नारकियोंका क्षेत्र कहते हैं– स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्धात, कषायसमुद्धात और वैक्रियिकसमुद्धातको प्राप्त हुए मिथ्यादृष्टि नारकी जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं और अढ़ाईद्वीपप्रमाण मानुषलोकसे संख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। अब इसके अर्थके प्ररूपण करनेके लिये यहांपर नारकियोंकी अवगाहना कहते हैं। वह इस प्रकार है– पहली पृथिवीके पहले पाथड़ेमें नारकियोंका उत्सेध तीन हाथ है। तेरहवें पाथड़ेमें सात धनुष, तीन हाथ और छह अंगुल नारकियोंका उत्सेध है।

भूमिमेंसे मुखको घटाकर उत्सेधका भाग देनेपर जो लब्ध आवे वह वृद्धिका प्रमाण होता है। अब जिस पटलके नारकियोंके उत्सेधका प्रमाण लाना हो उसे इच्छा मानकर उससे

---

१ सत्त-त्ति-छदंड-हत्थंगुलाणि कमसो हवंति घम्माए। चरिमिंदयम्मि उदओ। ति. प. २, २१७. रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं ×× सरीरोगाहणा ××× उक्कोसेणं सत्त धणूइं तिण्णि रयणीओ छच्च अंगुलाइं। जीवामि. ३, २, १२.

एदीए गाहाए सेसएक्कारसपत्थडणेरइयाणमुस्सेधा आणेयव्वा। तेसिं पमाणमेवं-

[1]प्रस्तार	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३[2]
धनुष	०	१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	७
हस्त	३	१	२	२	०	२	१	३	१	०	२	०	३
अंगुल	०	८½	१७	१½	१०	१८½	३	११½	२०	४½	१३	२१½	६

वृद्धिको गुणित कर दो और मुखका प्रमाण जोड़ दो। इसका जो फल होगा वही इच्छित पाथड़ेके नारकियोंका उत्सेध समझना चाहिये ॥ १७ ॥

विशेषार्थ- यद्यपि द्वितीयादि नरकोंमें प्रथमादि नरकोंके अन्तिम पटलके नारकियोंका उत्सेध मुख हो जाता है, परन्तु प्रथम नरकमें पहले पाथड़ेके ही नारकियोंका उत्सेध मुख रहेगा। अतएव उक्त गाथाके नियमानुसार पहले नरकके पहले पाथड़ेके नारकियोंका उत्सेध नहीं निकाला जा सकता है। पहले नरकमें पदका प्रमाण १२ और शेष नरकोंमें जहां जितने पाथड़े होंगे वहां उतना पदका प्रमाण रहेगा। पहले नरकमें दूसरा पाथड़ा पहला और अन्तिम पाथड़ा बारहवां गिना जायगा।

उदाहरण- प्रथम नरकमें मुखका प्रमाण ३ हाथ और भूमिका प्रमाण ७ धनुष, ३ हाथ, ६ अंगुल होता है। एक धनुषमें ४ हाथ और एक हाथमें २४ अंगुल होते हैं। इस प्रमाणके अनुसार मुखके अंगुल ३ × २४ = ७२ तथा भूमिके अंगुल ७ × ४ + ३ × २४ + ६ = ७५० हुए। उक्त गाथानुसार इसकी प्रक्रिया करनेपर ७५० − ७२ = ६७८/१२ = ५६½ अं. = ११३/२ = २ हाथ ८½ अंगुल होते हैं, यह प्रथम पृथिवीके प्रति-पटलमें वृद्धिका प्रमाण है।

अब यदि हमें प्रथम नरकके पांचवें पटलका उत्सेध प्रमाण निकालना है तो पूर्वोक्त नियमानुसार ५६½ अंगुलको ४ से गुणितकर प्रथम पटलके उत्सेधका प्रमाण उसमें जोड़ देना चाहिये। ११३/२ × ४ + ७२ = २२६ + ७२ = २९८ अं. = १२ हा. १० अं. = ३ ध. १० अं. यही प्रथम पृथिवीके पांचवें पटलके नारकियोंके उत्सेधका प्रमाण है।

इस पूर्वोक्त गाथाके नियमानुसार पहले नरकके पहले और तेरहवें पाथड़ेके अतिरिक्त शेष ग्यारह पाथड़ेके नारकियोंका उत्सेध ले आना चाहिये। उन अवगाहनाओंका प्रमाण यह है- (देखो मूलका नकशा)।

---

१ प्रतिषु केवलमङ्का एव निहिताः न प्रस्तारादिपदानि। तानि तु सुबोधार्थमस्माभिः सर्वत्र योजितानि।

२ रयणप्पहपुढवीए उदओ सीमंतणामपडलम्मि। जीवाणं हत्थतियं सेसेसु हाणिवड्ढीओ ॥ आदी अंते सोहिय रूऊणहाहिदम्मि हाणिचया। मुहसहिदे खिदिसुद्धे णियणियपदरेसु उच्छेहो ॥ हाणिचयाण पमाणं घम्माए होंति दोण्णि हत्थाइं। अट्ठंगुलाणि अंगुलभागो दोहिं विहत्तो य ॥ एक्कधणुमेक्कहत्थो सत्तरसंगुलदलं च णिरयम्मि। इगिदंडो तियहत्थो सत्तरसं अंगुलाणि रोरुगए ॥ दो दंडा दो हत्था भंतम्मि दिवड्ढमंगुलं होदि। उब्भंते दंडतियं दहंगुलाणि च उच्छेहो ॥ तिय दंडा दो हत्था अट्ठारहं अंगुलाणि पच्चद्धं। संमंतणामइंदयउच्छेहो

बिदियपुढविएक्कारसपत्थडे णेरइयाणमुस्सेधो पण्णरह धणूणि बे हत्था बारह अंगुलाणि[1]। सेसदसपत्थडणेरइयाणमुस्सेधो पुव्विल्लगाहाए आणेदव्वो। तेसिं पमाणमेदं-

प्रस्तार	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
धनुष	८	९	९	१०	११	१२	१२	१३	१४	१४	१५
हस्त	२	०	३	२	१	०	३	१	०	३	२
अंगुल	२ $\frac{२}{११}$	२२ $\frac{४}{११}$	१८ $\frac{६}{११}$	१४ $\frac{८}{११}$	१० $\frac{१०}{११}$	७ $\frac{१}{११}$	३ $\frac{३}{११}$	२३ $\frac{५}{११}$	१९ $\frac{७}{११}$	१५ $\frac{९}{११}$	१२

[2]

दूसरी पृथिवीके ग्यारहवें पाथड़ेमें नारकियोंका उत्सेध पन्द्रह धनुष, दो हाथ, बारह अंगुल है। प्रथमादि शेष दश पाथड़ोंके नारकियोंका उत्सेध पूर्वोक्त गाथाके नियमानुसार ले आना चाहिये। उन अवगाहनाओंका प्रमाण यह है- (देखो मूलका नकशा)।

विशेषार्थ- इस दूसरी पृथिवीमें मुखका प्रमाण ७ धनुष, ३ हाथ, ६ अंगुल और भूमिका प्रमाण १५ धनुष, २ हाथ, १२ अंगुल है। तथा, प्रतिपटल वृद्धिका प्रमाण २ हाथ, २० $\frac{२}{११}$ अंगुल है।

पढमपुढवीए ॥ चत्तारो चावाणि सत्तावीसं च अंगुलाणि पि। होदि असंभंतिदियउदओ पढमाइ पुढवीए ॥ चत्तारो कोदंडा तिय हत्था अंगुलाणि तेवीसं। दलिदाणि होदि उदओ विब्भंतयणामि पडलम्मि ॥ पंच च्चिय कोदंडा एक्को हत्थो य बीस पव्वाणि। तत्तिदयम्मि उदओ पण्णत्तो पढमखोणीए ॥ छ च्चिय कोदंडाणि चत्तारो अंगुलाणि पव्वद्धं। उच्छेहो णादव्वो पडलम्मि य तसिदणामम्मि ॥ वाणासणाणि छ च्चिय दो हत्था तेरसंगुलाणि पि। वक्कंतणामपडले उच्छेहो पढमपुढवीए ॥ सत्त य सरासणाणि अंगुलया एक्कवीस पव्वद्धं। पडलम्मि य उच्छेहो होदि अवक्कंतणामम्मि ॥ सत्त बिसिखासणाणि हत्थाइं तिण्णि छच्च अंगुलयं। चरमिंदयम्मि उदओ विक्कंते पढमपुढवीए ॥ ति. प. २, २१८-२३०.

१ दोच्चाए × × उक्कोसेणं पण्णरस धणूइं अड्ढाइज्जाओ रयणीओ। जीवाभि. ३, २, १२.

२ दो हत्था वीसंगुल एक्कारसभजिद दो वि पव्वाइं। एयाइं वड्ढीओ मुहसहिदे होंति उच्छेहो ॥ अट्ठ विसिहासणाणि दो हत्था अंगुलाणि चउवीसं। एक्कारसभजिदाइं उदवो पुण विदियवसुहाए ॥ णव दंडा बावीसंगुलाणि एक्कारसम्मि चउपव्वं। भजिदाओ सो भागो विदिए वसुहाए उच्छेहो ॥ णव दंडा तिय हत्था चउरुत्तरदोसयाणि पव्वाणि। एक्कारसभजिदाइं उदओ मणइंदयम्मि जीवाणं ॥ दस दंडा दो हत्था चोद्दस पव्वाणि अट्ठ भागा य। एक्कारसेहिं भजिदा उदओ तणगिंदयम्मि विदियाए ॥ एक्कारस चावाणि एक्को हत्थो दसंगुलाणि पि। एक्कारसहिददसंसा उदओ घादिंदयम्मि विदियाए ॥ बारस सरासणाणि पव्वाणि अट्ठहत्तरी होंति। एक्कारस भजिदाणि संघादे णारयाण उच्छेहो ॥ बारस सरासणाणि तिय हत्था तिण्णि अंगुलाणि च। एक्कारसहियतिभाया उदओ जिब्भिदयम्मि विदियाए ॥ तेवण्णाण य हत्था तेवीसा अंगुलाणि पणभागा। एक्कारसेहिं भजिदा जिब्भगपडलम्मि उच्छेहो। चोद्दस दंडा सोलसजुत्ताणि दोसयाणि पव्वाणि। एक्कारसभजिदाहिं लोलयणामम्मि उच्छेहो ॥ एक्कोणसट्ठि हत्था पणरस अंगुलाणि णव भागा। एक्कारसेहिं भजिदा लोलयणामम्मि उच्छेहो ॥ पण्णरसं कोदंडा दो हत्था बारसंगुलाणि च अंतिमपडले थणलोलगम्मि विदियाय उच्छेहो ॥ ति. प. २,२३१-२४२.

तदियपुढविणवमपत्थडम्हि णेरइयाणमुस्सेधो एक्कत्तीस धणूणि एगो हत्थो य[1]। सेसट्ठपत्थडणेरइयाणमुस्सेधो पुव्विल्लगाहाए आणेदव्वो। णवरि एत्थ एक्कत्तीस धणूणि सहत्थाणि भूमी होदि। पण्णरस धणूणि वे हत्था वारह अंगुलाणि मुहं होदि। भूमीदो मुहं सोहिय उस्सेधेण णवहि भागे हिदे वड्ढी होदि। तं वड्ढि णवसु ठाणेसु ठविय एगादिएगुत्तरेहि गुणगारेहि गुणिय मुहम्मि पक्खित्ते इच्छिदउस्सेधो होदि। तस्स पमाणमेदं–

प्रस्तार	१	२	३	४	५	६	७	८	९
धनुष	१७	१९	२०	२२	२४	२६	२७	२९	३१
हस्त	१	०	३	२	१	०	३	२	१
अंगुल	१०$\frac{२}{३}$	९$\frac{१}{३}$	८	६$\frac{२}{३}$	५$\frac{१}{३}$	४	२$\frac{२}{३}$	१$\frac{१}{३}$	०

[2]

चउत्थपुढविसत्तमपत्थडणेरइयाणमुस्सेधो वासट्ठी धणूणि वे हत्था य[3]। एदं

तीसरी पृथिवीके नौवें पाथड़ेमें नारकियोंका उत्सेध इकतीस धनुष और एक हाथ हैं। शेष आठ पाथड़ोंके नारकियोंका उत्सेध पूर्व गाथाके नियमानुसार ले आना चाहिये। इतनी विशेषता है कि यहांपर इकतीस धनुष और एक हाथ भूमि है। पन्द्रह धनुष, दो हाथ और बारह अंगुल मुख है। भूमिमेंसे मुखको घटाकर उत्सेध (पद) नौ का भाग देनेपर वृद्धिका प्रमाण आता है। (तीसरी पृथिवीमें प्रतिपटल वृद्धिका प्रमाण १ धनुष, २ हाथ और २२$\frac{२}{३}$ अंगुल है।) इस वृद्धिको नौ स्थानोंमें स्थापित करके एक आदि एकोत्तर गुणकारोंसे गुणित करके मुखमें मिला देनेपर इच्छित पाथड़ेके नारकियोंका उत्सेध आता है। उसका प्रमाण यह है– (देखो मूलका नकशा)।

चौथी पृथिवीके सातवें पाथडेमें नारकियोंका उत्सेध बासठ धनुष और दो हाथ है। इसे भूमिरूपसे स्थापित करके शेष छह पाथडोंमें नारकियोंका उत्सेध ले आना चाहिए। उसका प्रमाण यह है– (देखो मूलका नकशा)।

---

१ तच्चाए × × उक्कोसेणं एक्कतीस धणूइं एक्का रयणी। जीवामि. ३, २, १२.

२ एक्क धणू दो हत्था बावीसं अंगुलाणि दो भागा। तियमजिदं णायव्वा मेघाए हाणिवड्ढीओ॥ सत्तरसं चावाणि चोत्तीसं अंगुलाणि दो भागा। तियमजिदा मेघाए उदओ तत्तिदयम्मि जीवाणं॥ एक्कोणवीस दंडा अट्ठावीसंगुलाणि तिहिदाणि। तसिदिदयम्मि तदियक्खोणीए णारयाण उच्छेहो। बीसस्स दडसहियं सीदीए अंगुलाणि होदि तदा। तदियं चिय पुढवीए तवणिदयणारयम्मि उच्छेहो॥ णउदिपमाणा हत्था तियविहत्ताणि वीस पव्वाणि। मेघाए तवणिदयठिदाण जीवाण उच्छेहो॥ सत्ताणउदी हत्था सोलस पव्वाणि तियविहत्ताणि। उदओ णिदाघणामाए पडले णारया जीवा॥ छव्वीसं चावाणि चत्तारी अंगुलाणि मेघाए। पज्जलिदणामपडले ठिदाण जीवाण उच्छेहो॥ सत्तावीसं दंडा तिय हत्था अट्ठ अंगुलाणि च। तियमजिदाइं उदओ उज्जलिदे णारयाण णादव्वो॥ एकोणतीस दंडा दो हत्था अंगुलाणि चत्तारि। तियमजिदाइं उदओ संजलिदे तदीयपुढवीए॥ इकतीसं दंडाए एक्को हत्थो अ तदियपुढवीए। संपज्जलिदे चरिमिदयणारयाण होदि उच्छेहो॥ ति. प. २, २४३-२५२.

३ चउत्थीए × वासट्ठी धणूइं दोण्णि रयणीओ। जीवामि. ३, २, १२.